The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 4 | Special Issue 1 | February 2026
ISSN: 2583-973X (Online)
Website: www.theacademic.in

# National Education Policy (NEP 2020) and Indian Knowledge Tradition

## राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP 2020) और भारतीय ज्ञान परंपरा

**Dr. Jyoti Sharma**
Director, DSCET, Durg (C.G.)

**DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.18797809**

**ARTICLE DETAILS**

**Research Paper**
**Accepted:** 16-01-2026
**Published:** 05-02-2026

**Keywords:**
*शिक्षा, राष्ट्रीय शिक्षा नीति, यावसायिक कौशल, सतत विकास*

**ABSTRACT**

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020) भारत की शिक्षा व्यवस्था को 21वीं सदी की आवश्यकताओं के अनुरूप बनाने का एक व्यापक प्रयास है। यह नीति केवल संरचनात्मक सुधारों तक सीमित नहीं है, बल्कि भारतीय ज्ञान परंपरा, संस्कृति, मूल्य, नैतिकता और समग्र मानव विकास को शिक्षा के केंद्र में लाने पर विशेष बल देती है। भारतीय ज्ञान परंपरा, जिसमें वेद, उपनिषद, दर्शन, योग, आयुर्वेद, गणित, खगोलशास्त्र, व्याकरण, कला, साहित्य तथा लोक ज्ञान सम्मिलित हैं, सदियों से मानव कल्याण और ज्ञान के समग्र दृष्टिकोण को प्रस्तुत करती रही है। यह लेख राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और भारतीय ज्ञान परंपरा के अंतर्संबंध का विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत करता है। लेख में यह स्पष्ट किया गया है कि किस प्रकार NEP 2020 भारतीय ज्ञान प्रणाली को आधुनिक शिक्षा के साथ समन्वित कर एक मूल्य–आधारित, नवाचारी और रोजगारोन्मुख शिक्षा व्यवस्था का निर्माण करना चाहती है।

## भूमिका (Introduction)

शिक्षा किसी भी राष्ट्र की आत्मा होती है। किसी देश की सामाजिक संरचना, सांस्कृतिक चेतना, आर्थिक प्रगति तथा नैतिक मूल्य उसकी शिक्षा प्रणाली से गहराई से जुड़े होते हैं। भारतीय सभ्यता विश्व की प्राचीनतम और समृद्ध सभ्यताओं में से एक है, जहाँ शिक्षा को केवल आजीविका का साधन नहीं, बल्कि आत्मबोध, चरित्र निर्माण और समाज कल्याण का माध्यम माना गया है। वैदिक काल से लेकर आधुनिक युग तक भारतीय शिक्षा परंपरा ने ज्ञान को जीवन के समग्र विकास से जोड़ा है।

प्राचीन भारत में गुरुकुल प्रणाली के अंतर्गत शिक्षा प्रकृति के सान्निध्य में दी जाती थी। तक्षशिला, नालंदा, विक्रमशिला और वल्लभी जैसे विश्वविद्यालय वैश्विक ज्ञान के केंद्र थे, जहाँ देश–विदेश से विद्यार्थी अध्ययन हेतु आते थे। उस समय शिक्षा का उद्देश्य केवल विषय ज्ञान नहीं, बल्कि शील, संयम, सेवा और आत्मानुशासन का विकास था।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात भारत में शिक्षा व्यवस्था के पुनर्गठन हेतु 1968 तथा 1986 की राष्ट्रीय शिक्षा नीतियाँ लागू की गईं। यद्यपि इन नीतियों ने शिक्षा के प्रसार में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई, परंतु बदलते वैश्विक परिदृश्य, तकनीकी क्रांति, ज्ञान–आधारित अर्थव्यवस्था तथा 21वीं सदी की सामाजिक चुनौतियों के संदर्भ में एक नवीन और समग्र शिक्षा नीति की आवश्यकता महसूस की जा रही थी। इसी संदर्भ में वर्ष 2020 में राष्ट्रीय शिक्षा नीति लागू की गई।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की सबसे महत्त्वपूर्ण विशेषता यह है कि यह भारतीय ज्ञान परंपरा को आधुनिक शिक्षा व्यवस्था के साथ समन्वित करने का प्रयास करती है। यह नीति यह स्वीकार करती है कि किसी भी राष्ट्र की शिक्षा प्रणाली तभी सशक्त हो सकती है जब वह अपनी सांस्कृतिक जड़ों से जुड़ी हो। भारतीय ज्ञान परंपरा में निहित मूल्य, दर्शन, विज्ञान और जीवन दृष्टि को आधुनिक पाठ्यक्रम से जोड़कर NEP 2020 एक समग्र, मूल्य–आधारित और नवाचारी शिक्षा की परिकल्पना करती है।

## एनईपी 2020 क्या है?

भारत सरकार की नई शिक्षा नीति को एनईपी कहा जाता है। जुलाई 2020 में, भारत के केंद्रीय मंत्रिमंडल ने स्कूली शिक्षा से लेकर महाविद्यालय स्तर तक भारतीय शिक्षा प्रणाली में आधुनिक सुधार लाने के लिए नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) को मंजूरी दी। यह नीति भारत को 'वैश्विक ज्ञान महाशक्ति' बनाने की विचारधारा पर आधारित है। इसके अलावा, 2020 में एनईपी के लागू होने के साथ ही मानव संसाधन विकास मंत्रालय का नाम बदलकर शिक्षा मंत्रालय कर दिया गया।

नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति सुलभता, समानता, गुणवत्ता, सामर्थ्य और जवाबदेही के स्तंभों पर आधारित है। इसका उद्देश्य स्कूली और कॉलेज शिक्षा को अधिक समग्र, बहुविषयक और लचीला बनाना है, जो सतत विकास के लिए 2020 के एजेंडा के अनुरूप है।

## एनईपी 2020 के स्तंभ

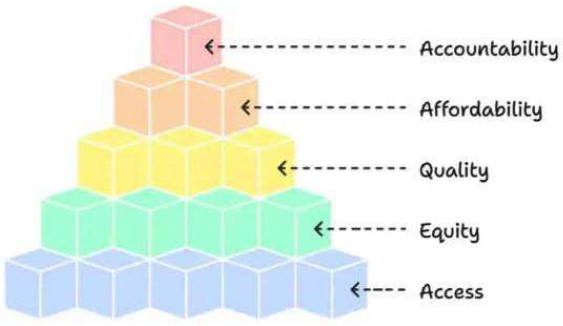

## नई शिक्षा नीति (एनईपी 2020) का उद्देश्य

राष्ट्रीय शिक्षा नीति का उद्देश्य शिक्षा प्रणाली के सभी पहलुओं, जिनमें नियमन और प्रशासन भी शामिल हैं, को संशोधित और सुव्यवस्थित करना है। इसका लक्ष्य 21वीं सदी की शिक्षा के महत्वाकांक्षी लक्ष्यों के अनुरूप एक नया ढांचा स्थापित करना है। उदाहरण के लिए, सतत विकास लक्ष्य (एसडीजी 4) भारत की समृद्ध परंपराओं और मूल्यों पर आधारित है। यह राष्ट्रीय शिक्षा नीति प्रत्येक व्यक्ति की रचनात्मक क्षमता के पोषण पर विशेष बल देती है। यह इस विश्वास पर आधारित है कि शिक्षा को साक्षरता और अंकगणित जैसे मूलभूत कौशलों से लेकर आलोचनात्मक सोच, समस्या समाधान और सामाजिक, नैतिक और भावनात्मक क्षमताओं जैसे उन्नत कौशलों तक संज्ञानात्मक क्षमताओं को बढ़ावा देना चाहिए।

## नई शिक्षा नीति की प्रमुख विशेषताएं

### 1. भारतीय संस्कृति और परंपरा का संरक्षण

शिक्षा का उद्देश्य केवल रोजगार नहीं, बल्कि संस्कार, संस्कृति और चरित्र निर्माण बताया गया है।

गुरुकुल परंपरा, आश्रम व्यवस्था, गुरु–शिष्य संबंध जैसे मूल्यों को आधुनिक शिक्षा से जोड़ा गया है।

### 2. मातृभाषा /स्थानीय भाषा में शिक्षा

कक्षा 5 तक, और संभव हो तो 8 तक मातृभाषा / क्षेत्रीय भाषा में पढ़ाई पर जोर।

यह हमारी प्राचीन परंपरा है जहाँ शिक्षा संस्कृत, प्राकृत, पालि, अपभ्रंश और स्थानीय

## भारतीय ज्ञान परंपरा (Indian Knowledge System – IKS) का समावेश

NEP में निम्न क्षेत्रों को पाठ्यक्रम का भाग बनाने की बात है –

- वेद, उपनिषद, पुराण, रामायण, महाभारत
- आयुर्वेद, गणित, वास्तुशास्त्र
- नाट्यशास्त्र, संगीत, शिल्प, हस्तकला
- भारतीय दर्शन – सांख्य, योग, वेदांत, बौद्ध, जैन दर्शन

### 3. योग, ध्यान और जीवन कौशल का विकास

छात्रों में मानसिक संतुलन, आत्मसंयम और नैतिकता के लिए

- योग

- प्राणायाम
- ध्यान

को शिक्षा का अनिवार्य अंग बनाया गया।

4. **मूल्य आधारित शिक्षा (Value Based Education)**
   - सत्य, अहिंसा, करुणा, सेवा, अनुशासन जैसे भारतीय जीवन मूल्यों को बढ़ावा।
   - व्यक्तित्व निर्माण को शिक्षा का मुख्य उद्देश्य बताया गया है।
5. **बहुविषयक शिक्षा – "एक विषय नहीं, सम्पूर्ण ज्ञान"**
   - प्राचीन भारतीय विश्वविद्यालयों (तक्षशिला, नालंदा, विक्रमशिला) की तर्ज पर
   - कला + विज्ञान + दर्शन + तकनीक
   - सबको जोड़कर पढ़ाने की व्यवस्था।
6. **स्थानीय ज्ञान और परंपराओं का संरक्षण**
   - क्षेत्रीय लोककला, लोकसंगीत, कृषि ज्ञान, औषधीय पौधों की जानकारी
   - पाठ्यक्रम में शामिल करने का प्रावधान।
7. **भारतीय इतिहास और महापुरुषों का यथार्थ अध्ययन**
   - चाणक्य, आर्यभट्ट, चरक, सुश्रुत, स्वामी विवेकानंद, गांधीजी आदि के विचारों को शिक्षा से जोड़ना।
8. **नैतिक एवं आध्यात्मिक शिक्षा**
   - जीवन जीने की कला, कर्तव्यबोध और आत्मचिंतन को पढ़ाई का हिस्सा बनाया गया।
9. **आत्मनिर्भर भारत की भावना**
   - स्वदेशी ज्ञान, कौशल और परंपरा पर आधारित
   - "वसुधैव कुटुंबकम्" की भावना से वैश्विक नागरिक का निर्माण।

## नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति की आवश्यकता

2020 में नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति लागू होने तक भारतीय शिक्षा प्रणाली में कई खामियां थीं। अवधारणाओं को समझने की बजाय रटने को अधिक प्राथमिकता दी जाती थी। इसके अलावा, कई बोडों का होना भी एक बड़ी समस्या थी। प्रत्येक बोर्ड में अलग–अलग कौशलों के लिए अलग–अलग शिक्षण विधियां थीं, और फिर हर छात्र को एक ही मानकीकृत बोर्ड परीक्षा देनी पड़ती थी।

इसके अलावा, बीते वर्षों में पारंपरिक विषयों को सीखने एवं उनमें महारत हासिल करने पर अधिक जोर दिया गया और व्यावसायिक कौशल विकसित करने पर कम। नई शिक्षा नीति में भारतीय शिक्षा प्रणाली की सभी कमियों और सीमाओं का ध्यान रखा गया है। साथ ही, इस नीति का उद्देश्य व्यावसायिक और औपचारिक शिक्षा के बीच के अंतर को कम करना है।

**स्वतंत्रता के बाद भारतीय षिक्षा प्रणाली में हुए सुधार**

| वर्ष | आयोजन |
|---|---|
| 1948 | पहला आयोग, विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग, स्थापित किया गया था। |
| 1952 | माध्यमिक शिक्षा आयोग की स्थापना की गई। |
| 1964–1966 | भारतीय शिक्षा आयोग की शुरुवात की गई। |
| 1968 | पहली राष्ट्रीय शिक्षा नीति लागू की गई। |
| 1986 | नई शिक्षा नीति तैयार की गई। |
| 1992 | पिछली शिक्षा नीति में संशोधन किया गया था। |
| 2005 | 1986 की शिक्षा नीति में फिर से संशोधन किया गया। |
| 2020 | नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) को मंत्रिमंडल ने पारित कर दिया है। |
| 2023–2024 | इस शैक्षण्कि वर्ष में नई शिक्षा नीति लागू की गई। |

**NEP के शीर्ष 20 सिद्धांत :**

1. रचनात्मकता, आलोचनात्मक सोच, नैतिकता और मानवीय मूल्यों को बढ़ावा देना।
2. बहुभाषावाद और संचार कौशल को बढ़ावा देना।
3. उच्च जोखिम वाली परीक्षाओं के बजाय सीखने में सहायता के लिए नियमित रचनात्मक मूल्यांकन।
4. शिक्षा तक पहुंच बढ़ाने के लिए प्रौद्योगिकी का उपयोग, विशेष रूप से विकलांग छात्रों के लिए, और शैक्षिक योजना में सुधार करना।
5. सभी शैक्षिक नीतियों में विविधता, समानता और समावेशन के प्रति प्रतिबद्धता।
6. प्रारंभिक बचपन से लेकर उच्च शिक्षा तक, शिक्षा के सभी स्तरों पर पाठ्यक्रम में सामंजस्य।
7. शिक्षक अधिगम के केंद्र में होते हैं, इसलिए उनकी भर्ती, व्यावसायिक विकास और सकारात्मक कार्य वातावरण पर समान रूप से ध्यान दिया जाना चाहिए।
8. एक ऐसा नियामक ढांचा जो पारदर्शिता और चार सुनिश्चित करते हुए स्वायत्तता और शासन को प्रोत्साहित करता है।

9. शिक्षा और प्रगति के मूलभूत तत्व के रूप में अनुसंधान को बढ़ावा देना।
10. शैक्षिक प्रगति सुनिश्चित करने के लिए विशेषज्ञों द्वारा निरंतर समीक्षा और मूल्यांकन।
11. भारत की विविध सांस्कृतिक विरासत और ज्ञान प्रणालियों के प्रति गौरव को बढ़ावा देना।
12. शिक्षा एक सार्वजनिक सेवा है, और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रत्येक बच्चे का मूलभूत अधिकार है।
13. सार्वजनिक शिक्षा में महत्वपूर्ण निवेश और परोपकारी निजी भागीदारी को बढ़ावा देना।
14. नियमित छात्र मूल्यांकन पर ध्यान केंद्रित करें।

**भारतीय ज्ञान परंपराः एक विस्तृत परिचय**

भारतीय ज्ञान परंपरा केवल ग्रथों का संग्रह नहीं है, बल्कि यह जीवन को देखने और जीने की एक समग्र दृष्टि है। इसमें भौतिक और आध्यात्मिक, वैज्ञानिक और नैतिक, व्यक्तिगत और सामाजिक सभी पक्षों का संतुलित समावेश मिलता है। भारतीय ज्ञान परंपरा का मूल उद्देश्य 'सर्वे भवन्तु सुखिनः– की भावना के साथ मानव कल्याण को सर्वोपरि रखना रहा है।

**1. वैदिक साहित्य**

ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद भारतीय ज्ञान की आधारशिला है। इन ग्रंथों में प्रकृति, पर्यावरण संरक्षण, सामाजिक समरसता, यज्ञ, विज्ञान तथा नैतिक मूल्यों की गहन चर्चा मिलती है। वैदिक शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति को प्रकृति और समाज के साथ सामंजस्य स्थापित करना।

**2. उपनिषद और भारतीय दर्शन**

उपनिषदों में आत्मा, ब्रह्म, ज्ञान, कर्म और मोक्ष की आवधारणाएँ प्रस्तुत की गई हैं। भारतीय दर्शन के षड्दर्शन – सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, मीमांसा और वेदांत – तार्किक चिंतन, विवेक और आत्मानुभूति पर आधारित हैं। ये दर्शन व्यक्ति को केवल बौद्धिक नहीं, बल्कि नैतिक और आध्यात्मिक रूप से भी समृद्ध बनाते हैं।

**3. योग और आयुर्वेद**

योग भारतीय ज्ञान परंपरा का एक अनुपम उपहार है, जो शारीरिक, मानसिक और आत्मिक संतुलन का विज्ञान है। आयुर्वेद स्वस्थ जीवनशैली, रोग निवारण और प्राकृतिक चिकित्सा पर आधारित है। आज वैश्विक स्तर पर योग और आयुर्वेद की स्वीकार्यता भारतीय ज्ञान परंपरा की प्रासंगिकता को सिद्ध करती है।

**4. गणित, विज्ञान और प्रौद्योगकी**

भारतीय विद्वानों ने गणित और विज्ञान के क्षेत्र में अमूल्य योगदान दिया। शून्य की अवधारणा, दशमलव प्रणाली, बीजगणित, त्रिकोणमिति और खगोलशास्त्र में भारत की उपलब्धियाँ विश्वविख्यात हैं। आर्यभट्ट, भास्कराचार्य, वराहमिहिर, चरक और सुश्रुत जैसे विद्वानों ने वैज्ञानिक सोच को समृद्ध किया।

**5. कला, साहित्य और लोक ज्ञान**

भारतय ज्ञान परंपरा में संगीत, नृत्य, चित्रकला, वास्तुकला, साहित्य और लोक परंपराओं का विश्ज्ञेष स्थान है। रामायण, महाभारत, पुराण, संस्कृत, और क्षेत्रीय साहित्य भारतीय समाज के नैतिक और सांस्कृतिक मूल्यों को अभिव्यक्त करते हैं। लोक ज्ञान ग्रामीण जीवन, कृषि, पर्यावरण और सामुदायिक जीवन से गहराई से जुड़ा हुआ है।

## NEP 2020 और भारतीय ज्ञान परंपरा (IKS) का समन्वयः

1. **समग्र विकास :** IKS को शामिल करके, NEP 2020 का लक्ष्य केवल संज्ञानात्मक कौशल ही नहीं, बल्कि नैतिक, चारित्रिक, और सामाजिक–भावनात्मक विकास भी करना है, जिससे छात्र 'वसुधैव कुटुंबकम्' (पूरी दुनिया एक परिवार है) के विचार को समझें।
2. **सांस्कृतिक जुड़ाव :** यह नीति छात्रों को अपनी सांस्कृतिक जड़ों से जोड़ती है, जिससे उनमें अपने देश और संस्कृति के प्रति गौरवबोध और जुड़ाव पैदा होता है।
3. **आधुनिकता के साथ समन्वय :** IKS को आधुनिक विज्ञान, प्रबंधन और प्रौद्योगिकी के साथ एकीकृत किया जाता है, ताकि छात्र पारंपरिक ज्ञान के खजाने का उपयोग करके समकालीन चुनौतियों का समाधान कर सकें।
4. **पाठ्यक्रम में एकीकरण :** NEP 2020 के तहत, IKS से संबंधित अवधारणाओं को विभिन्न विषयों (विज्ञान, गणित, कला, स्वास्थ्य) के पाठ्यक्रम में जोड़ा जा रहा है, जिससे अंतर–विषयक समझ बढ़े।
5. **अनुसंधान और प्रलेखन :** यह IKS पर अनुसंधान और दस्तावेजीकरण को बढ़ावा देती है, और इसके लिए विशेष केंद्र स्थापित करने का प्रस्ताव करती है।
6. **भाषा और बहुभाषावाद :** भारतीय भाषाओं को ज्ञान का वाहक माना जाता है, और नीति मातृभाषा और बहुभाषावाद पर जोर देती है ताकि छात्र पारंपरिक ग्रंथों को उनकी मूल भाषा में समझ सकें।

**मुख्य उद्देश्यः**

- रटने की बजाय समझ और रचनात्मक सोच विकसित करना.
- छात्रों में उच्च मानवीय मूल्यों (सत्य, अहिंसा, समानता, न्याय) को विकसित करना.
- भारत को 'विश्वगुरु' बनाने के लक्ष्य की दिशा में अग्रसर होना, जो ज्ञान और संस्कृति में समृद्ध हो।

संक्षेप में, NEP 2020, भारतीय ज्ञान परंपरा को एक केंद्रीय स्तंभ मानकर, शिक्षा को भारतीय मूल्यों और आधुनिक आवश्यकताओं के साथ जोड़कर एक 'स्व' आधारित, समग्र और वैश्विक शिक्षा प्रणाली का निर्माण करना चाहती है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP 2020), भारतीय ज्ञान परंपरा (Indian knowledge Systems – IKS) को आधुनिक शिक्षा में एकीकृत करती है, जिसका उद्देश्य समग्र विकास करना, नैतिक मूल्यों को स्थापित करना और 'वसुधैव कुटुम्बकम्' जैसे सिद्धांतों के माध्यम से भारत को एक विश्व गुरु बनाना है, जिसमें वेदों, उपनिषदों, योग और स्वदेशी ज्ञान प्रणालियों को पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाकर छात्रों में गौरव और वैश्विक दृष्टिकोण विकसित किया जाता है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) का उद्देश्य एक समान शैक्षिक ढांचा स्थापित करना है जो राष्ट्र के परिवर्तन में सक्रिय रूप से योगदान दे। यह सभी नागरिकों को उच्च स्तरीय शिक्षा प्रदान करती है और भारत को वैश्विक ज्ञान के क्षेत्र में अग्रणी बनाती है।

इस नीति का उद्देश्य स्थान की परवाह किए बिना सभी छात्रों को उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा प्रणाली प्रदान करना है। यह ऐतिहासिक रूप से हाशिए पर पड़े, वंचित और अल्प प्रतिनिधित्व वाले समुदायों के समर्थन पर जोर देती है। इसके साथ ही, प्रतियोगी परीक्षाओं और ग्रेड पर अधिक बल दिया गया है। जुलाई 2020 तक, भारत ने अपनी शैक्षिक अवसंरचना में कई बदलाव देखे हैं जो उसी 10+2 प्रणाली का अनुसरण करते हैं।

**निष्कर्ष**

नई शिक्षा नीति 2020 भारतीय ज्ञान परंपरा को केवल याद रखने की नहीं, बल्कि जीने और अपनाने की नीति है। यह शिक्षा को

''डिग्री नहीं, जीवन निर्माण'' का माध्यम बनाती है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और भारतीय ज्ञान परंपरा का समन्वय भारत की शिक्षा व्यवस्था को एक नई और सुदृढ़ दिशा प्रदान करता है। यह नीति परंपरा और आधुनिकता के बीच संतुलन स्थापित करती है। भारतीय ज्ञान परंपरा के नैतिक, सांस्कृतिक और वैज्ञानिक मूल्यों को आधुनिक शिक्षा के साथ जोड़कर एनईपी 2020 एक एसेस समाज की परिकल्पना करती है जो बौद्धिक रूप से सक्षम होने के साथ–साथ नैतिक और सामाजिक रूप से भी उत्तरदायी हो।

यदि इस नीति का प्रभावी और ईमानदार क्रियान्वयन किया जाए, तो यह न केवल शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार करेगी, बल्कि भारत को वैश्विक ज्ञान नेतृत्व की दिशाा में भी अग्रसर करेगी। भारतीय ज्ञान परंपरा आधारित शिक्षा आत्मनिर्भर भारत, नैतिक नागरिकता और सतत विकास के लक्ष्यों का प्राप्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।

संदर्भ


- https://share.google/9OWYTr1ytpc4OJWdH
- https://share.google/7VeZQS6IcYI09pHm9
- https://share.google/b9xYmOUnNw1xDZwpm
- https://share.google/pPwe2M5xkYQSbKXvG
- https://share.google/Y8JrGBzaqVZ9B7SDA
- https://share.google/ycdI3wiGFIKvlm2zI
- https://share.google/G0JIuSWFlwk0YcvKH
- https://share.google/u4easkq3drZ0dV9Yb
- https://share.google/g9W2Qurnwy41Dc2Do